प्रकाशकीय--

पाठकों के समक्ष सामायिक सूत्र का नवीन संस्करण सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से रखते हुवे अति हर्ष हो रहा है। योग्य सम्पादक श्री पार्श्वकुमारजी मेहता ने पुस्तक को अर्थ सहित सम्पादन करके पाठकों को सामायिक क्या है? यह मर्म समझा दिया है।

पुस्तक प्रकाशन में श्रीमान् केसरीमलजी चौसीलालजी कोठारी जयपुर निवासी ने २००) की आर्थिक सहायता दी है अतः उनको अनेकानेक धन्यवाद। आप द्वारा समय २ पर इसी प्रकार सहायता मिलती रही है अतः मण्डल आपका आभारी है। भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा के साथः—

मंत्री की ओर से—
भँवरलाल बोथरा

जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं
का ही सुपरिणाम हैं।

सामायिक-सूत्र

१—नमस्कार महामन्त्र

नमो अरिहन्ताणं,
नमो सिद्धाणं,
नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं,
नमो लोए सव्व साहूणं ।
एसो पंच नमुक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवई मंगलं ॥

अर्थः—

नमो अरिहन्ताणं=अरिहन्तों को नमस्कार करता हूँ ।
नमो सिद्धाणं =सिद्धों को ,, ,,
नमो आयरियाणं=आचार्यों को ,, ,,
नमो उवज्झायाणं=उपाध्यायों को ,, ,,
नमो लोए सव्व साहूणं=लोक के सब साधुओं को ,,

महात्म्य-फलः—

एसो = यह । पंच = पाँचों को किया हुआ ।
नमुक्कारो = नमस्कार । सव्व पाव = सब पापों का ।
प्पणासणो= नाश करने वाला है । च= और ।
सव्वेसिं = सब । मंगलाणं = मंगलों में ।
पढमं = प्रधान । मंगलं = मंगल । हवइ=है ।

१—गुरु वन्दना का पाठ

तिक्खुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं करेमि वन्दामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वन्दामि ।

अर्थः—

तिक्खुतो = तीनबार । आयाहिणं = दक्षिण तरफ से ।
पयाहिणं = प्रदक्षिणा । करेमि = करता हूँ ।
नमंसामि = नमस्कार करता हूँ ।
सक्कारेमि= सत्कार ,, ,,
सम्माणेमि= सम्मान ,, ,,
कल्लाणं = (आप) कल्याण रूप है ।

की जयपुर से सच स ...
संचालन का ही सुपरिणाम हैं ।

दोनों हाथ, दोनों पैर और सिर झुकाकर
पंचांग वन्दन कीजिये ।

मंगलं = (आप) मंगल रूप हैं
देवयं = ,, देव ,,
चेइय = ,, ज्ञानवन्त हैं।
पज्जुवासामि = आपकी सेवा करता हूँ।
मत्थएण = मस्तक झुकाकर
वन्दामि = वन्दन करता हूँ।
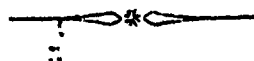
३—इच्छाकारेणं का पाठ

इच्छाकारेणं संदिसह भगवं। इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि। पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा, उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया बेइन्दिया तेइन्दिया चउरिन्दिया पंचेन्दिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

अर्थः—

इच्छाकारेणं संदिसह भगवं = हे भगवन् इच्छापूर्वक आज्ञा दीजिए।

इरियावहियं पडिक्कमामि = मार्ग में आते जाते लगे हुए पापो से अलग होने की।

इच्छामि पडिक्कमिउं
इरियावहियाए
विराहणाए } मार्ग में चलने से हुई विराधना का प्रतिक्रमण करने की इच्छा करता हूँ।

गमणागमणे = जाने आने में
पाणक्कमणे = प्राणी को दबाकर
बीयक्कमणे = बीज को दबाकर
हरियक्कमणे = वनस्पति को दबाकर
ओसा = ओस
उत्तिंग = कीड़ियों के बीच
पणग = पाँच रंग की काई
दग = कच्चा पानी
मट्टि = सचित मिट्टी
मक्कडा संताणा=मकड़ी के जाले को
संकमणे = कुचलकर
जे = जो। मे = मैंने।
जीवा = जीवों की

संचालन का ही सुपरिणाम है।

४ - आत्मशुद्धि का पाठ

—*—

तस्सउत्तरी करणेणं, पायच्छित-करणेणं, विसोहि करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं, कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं णीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डूएणं वायणिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहियो हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहन्ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

अर्थः—

तस्स उत्तरी करणेणं = आत्मा को शुद्ध करने के लिए।
पायच्छित करणेणं = प्रायश्चित करने के लिए।
विसोहि करणेणं = विशेष शुद्धि करने के लिए।

सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

विसल्ली करणेणं = शल्य रहित करने के लिए।
पावाणं कम्माणं = पाप कर्मों को
निग्घायणट्ठाए = नष्ट करने के लिए।
ठामि काउस्सग्गं = काया के व्यापार का त्याग करता हूं।
अन्नत्थ = सिवाय नीचे लिखे
उससिएणं = साँस लेने से
णीससिएणं = साँस छोड़ने से
खासिएणं = खांशी आने से
छीएणं = छींक आने से
जंभाइएणं = जम्हाई आने से
उड्डुएणं = डकार आने से
वाय निसग्गेणं = अधो वायु से
भमलीए = चक्कर आने से
पित्त मुच्छाए = पित्त के कारण मूर्छा से
सुहुमेहिं अंग संचालेहिं = सूक्ष्म अंग संचालन से
सुहुमेहिं खेल संचालेहिं = सूक्ष्म कफ संचालन से
सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं = सूक्ष्म दृष्टि संचालन से
एवमाइएहिं आगारेहिं = इस प्रकार के (आगारों के सिवाय)
अभग्गो अविराहिओ हुज्ज में काउस्सग्गो = मेरा ध्यान अभंग हो।
जाव अरिहताणं भगवताणं = जब तक अरिहन्त भगवान को।

नमोक्कारेणं = नमस्कार करके
न पारेमि ताव = न पालूँ तब तक
कायं ठाणेणं = शरीर को स्थिर रखकर
मोणेणं = मौन रखकर
झाणेणं = ध्यान धर कर
अप्पाणं वोसिरामि = अपनी आत्मा को पापकारी प्रवृत्ति से अलग करता हूँ ।
(कषाय आदि से)

———*———

५ - चौवीस जिन स्तुति का पाठः-

———*———

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणंच सुमइंच ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वन्दे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल-सिज्जंस वासुपुज्जंच ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥
कुंथुं अरंच मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।

सीधे आसन पर स्थिर बैठकर बाँयी अंजली पर दायीं अंजली रखकर अडोल ध्यान कीजिये।

वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहूय रयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तिय वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभिरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

—०—

अर्थ:—

लोगस्स उज्जोयगरे = लोक में प्रकाश करने वाले
धम्मतित्थयरे = धर्मतीर्थ की स्थापना करने वाले
जिणे = रागद्वेष को जीतने वाले
अरिहंते कित्तइस्सं = अरिहन्तों की स्तुति करता हूँ
चउवीसंपि केवली = चौबीस केवली तीर्थंकरों की
उसभमजियं च वंदे = ऋषभदेवजी और अजितनाथजी को वंदन करता हूँ।
संभवमभिणंदणं च = संभवनाथजी और अभिनन्दनजी
सुमइं च = सुमतिनाथजी को
पउमप्पहं सुपासं = पद्मप्रभुजी, सुपार्श्वनाथजी को

जिणं च चंदप्पहं वंदे = राग-द्वेष के विजयी चन्द्रप्रभुजी को वंदन करता हूँ ।

सुविहिं च पुप्फदंतं = सुविधिनाथजी जिनका दूसरा नाम पुष्पदन्तजी है ।

सीयलसिज्जंस = शीतलनाथजी श्रेयांसनाथजी

वासुपुज्जं च = और वासुपूज्यजी को

विमलमणंतं च जिणं = विमलनाथजी तथा अनन्त जिनेश्वर को

धम्मं संतिं च वंदामि = धर्मनाथजी और शांतिनाथजी को वंदन करता हूँ ।

कुंथुं अरं च = कुन्थुनाथजी और अरहनाथजी

मल्लिंवंदे = मल्लिनाथजी को वंदन करता हूं ।

मुणिसुव्वयं नमिजिणं च = मुनिसुव्रतजी और नमिनाथ जी को

वंदामि रिट्ठनेमि = अरिष्टनेमीजी को वंदन करता हूं ।

पासंतह वद्धमाणं च = पार्श्वनाथजी और वर्द्धमानजी को

एवंमए अभिथुआ = इस प्रकार मैंने जिनकी स्तुति की है वे

विहूयरयमला = कर्मरूपी रज-मैल से रहित

पहीण जर मरणा = बुढ़ापा और मृत्यु से रहित

चउवीसं पि जिणवरा = चौवीसों जिनेश्वर

तित्थयरा मे पसीयंतु = तीर्थंकर मुझपर प्रसन्न होवें ।

... संचालन का ही सुपरिणाम है ।

कित्तिय वंदिय महिया = वचनयोग से कीर्त्तित मनयोग से वंदित और काययोग से नमस्कृत

जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा = लोक में जो उत्तम सिद्ध हैं ।

आरुग्ग बोहिलाभं = आरोग्य बोधिलाभ

समाहिवरमुत्तमंदिन्तु = उत्तम समाधि देवें ।

चंदेसु निम्मलयरा = चन्द्रों से भी निर्मल

आईच्चेसु अहियं = सूर्यों से भी अधिक

पयासयरा = प्रकाश करने वाले

सागर वर गंभीरा = समुद्र के समान गम्भीर

सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु = सिद्ध मुझे सिद्धि [मोक्ष] देवें ।

६ - सामायिक लेने का पाठः-

करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं * पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

* जितनी सामायिक लेनी हो उतना मुहूर्त प्रकट कहकर फिर आगे पाठ बोलना चाहिए ।

अर्थ:—

करेमि भंते ! सामाइयं = हे भगवान् ! मैं सामायिक करता हूं।

सावज्जं जोगं = सावद्य योग का

पच्चक्खामि = त्याग करता हूं।

जावनियमं पज्जुवासामि = जब तक नियम है सेवन करूंगा

दुविहं तिविहेणं न करेमि = दो करण तीन योग से न करूंगा

न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा = न कराऊंगा, मन, वचन और काया से

तस्सभंते ! पाडिक्कमामि = हे भगवान् ! उसे छोड़ता हूं।

निंदामि गरिहामि = निन्दा करता हूँ, धिक्कारता हूँ।

अप्पाणं वोसिरामि = अपनी आत्मा को उससे अलग करता हूँ।

७. शक्रस्तव का पाठ:—

—०—(०)—०—

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं संयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरियाणं पुरिसवर गंधहत्थीणं

द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

बाँयें घुटने पर अंजली जोड़ कर शक्रस्तव पढ़िये ।

लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपइवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्म-सारहीणं धम्मवर चाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं सरणगइपइट्ठा अप्पडिहयवरनाणं दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोयगाणं सव्वनूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंत-मक्खयमव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगई-नामधेयं "ठाणं-संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं"।

दूसरे नमोत्थुणं में नीचे लकीर की जगह "ठाणं संपाविउकामाणं नमो जिणाणं जिअभयाणं बोलें"।

अर्थः—

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं = नमस्कार हो अरिहन्त भगवन्तों को।

आइगराणं तित्थयराणं = धर्म की स्थापना करने वाले,
चार तीर्थ की रचना करने वाले।

संयंसं बुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं=स्वयं बोधको प्राप्त, पुरुषों में उत्तम

पुरिस सीहाणं =पुरुषों में सिंह के समान

पुरिसवर पुंडरियाणं = पुरुषों में श्रेष्ठ पुंडरिक कमल के समान

पुरिसवर गंधहत्थीणं = पुरुषों में श्रेष्ठ गंधहस्ती के समान

लोगुत्तमाणं = तीनों लोक में उत्तम

लोगनाहाणं = ,, के नाथ

लोगहियाणं = ,, का हित करने वाले

लोगपईवाणं = ,, में दीपक के समान

लोगपज्जो अगराणं = लोक में उद्योत करने वाले

अभयदयाणं = अभय देने वाले

चक्खुदयाणं = ज्ञानरूपी चक्षु देने वाले

मग्गदयाणं = मोक्ष मार्ग बताने वाले

सरणदयाणं = शरण देने वाले

जीवदयाणं = संयमी जीवन देने वाले

बोहिदयाणं = बोधि-सम्यक्त्व देने वाले

धम्मदयाणं = धर्म के दाता

धम्मदेसियाणं = धर्म के उपदेशक

की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

धम्मनायगाणं = धर्म के नाथ
धम्मसारहिणं = धर्मरूपी रथ के सारथी
धम्मवर चाउरंत चक्कवट्टीणं=श्रेष्ठ धर्म के द्वारा चारोंगति का अन्त करने वाले चक्रवर्ती के समान
दीवोत्ताणं = द्वीप के समान
सरण गइ पइट्ठाणं = जीवों को शरण गति व आधार देने वाले
अप्पडिहयवरनाण दंसणधराणं = उत्तम केवलज्ञान-दर्शन के धारक
विअट्टछउमाणं = घाति कर्म रहित
जिणाणं जावयाणं = रागद्वेष को जीतने व दूसरों को जीताने वाले
तिन्नाणं तारयाणं = भवसागर से तिरने व तैराने वाले
बुद्धाणं बोहियाणं = स्वयं बोध पाये हुए दूसरों को बोध देने वाले
मुत्ताणं मोयगाणं = स्वयं कर्मों से मुक्त व दूसरों को मुक्त कराने वाले
सव्वनूणं सव्वदरिसीणं = सर्वज्ञ, सर्वदर्शी
सिवम् अयलम् = निरुपद्रवी, अचल
अरूयम् अणंतम् = आरोग्य, अनन्त

अक्खयम्-अव्वाबाहम्	= अक्षय, पीड़ा रहित
अपुणरावित्ति	= पुनः लौटकर नहीं आसके (ऐसे)
सिद्धिगइ नाम धेयं	= सिद्ध गति नामके
ठाणं संपत्ताणं	= स्थान को प्राप्त हुए
नमोजिणाणं	=नमस्कार हो जिनेश्वर भगवान को
जिअभयाणं	= जिन्होंने भय को जीत लिया है।

——— ——*————

८—सामायिक पालने का पाठः—

१—एयस्स नवमस्स सामाइयवयस्स पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोउं मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे सामाइयस्स सइ अकरणया सामाइयस्स अण वट्ठियस्स करणया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

२—सामाइयं सम्मं काएणं, न फासिअं न, पालिअं न तीरियं न किट्टियं न सोहिअं, न आराहियं, आणाए अणुपालिअं न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

अर्थः—

एयस्स नवमस्स = इस नौवें
सामाइयवयस्स = सामयिक व्रत के
पंच अइयारा = पाँच अतिचार
जाणियव्वा = जानने योग्य हैं
न समायरियव्वा =सेवन नहीं करना
तंजहा = वे ये हैं
मणदुप्पणिहाणे = मन को बुरे विचारों में लगाना
वयदुप्पणिहाणे = खराब वचन बोलना
कायदुप्पणिहाणे = शरीर से अयोग्य कार्य करना
सामाइयस्स सइ अकरणया = सामायिक की स्मृति न रखी हो
सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया = ठीक तरह सामायिक न की हो।
तस्समिच्छामि दुक्कडं = उसका दोष मिथ्या हो।
सामाइअं सम्मं = सामायिक व्रत को अच्छी तरह
काएणं न फासियं = काया से न स्पर्शा हो।
न पालियं = पाला न हो।
न तीरियं = पार न उतारा हो।
न कित्तियं = कीर्त्तन न किया हो।
न सोहियं = शुद्ध न किया हो।
न आराहियं= आराधन न किया हो।

आणाए = आज्ञा के अनुसार
अणुपालियं न भवइ = पालन न किया हो।
तस्स मिच्छामि दुक्कडं= उसका पाप मिथ्या हो।

३—सामायिक में दस मन के दस वचन के बारह काया के इन बत्तीस दोषों में से कोई दोष लगा हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

४—सामायिक में स्त्री कथा, भक्त कथा, देश कथा, राज कथा इन चार विकथा में से कोई विकथा की हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

५—सामायिक में आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा, परिग्रह संज्ञा इन चार संज्ञाओं में किसी का सेवन किया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

६—सामायिक में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार अनाचार जानते अजानते मन, वचन, काया से कोई दोष लगा हो तो तस्समिच्छामि दुक्कड़ं।

द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। [illegible] मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

७—सामायिक व्रत विधि से लिया हो, विधि से पाला हो; विधि में कोई अविधि हुई हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

८—सामायिक में काना, मात्रा, अनुस्वार, पद, अक्षर गाथा, ह्रस्व दीर्घ कम ज्यादा पढा हो तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान् की साक्षी से तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

सामायिक लेने की विधिः-

पूंजनी से स्थान को पूँजकर आसन बिछा कर बैठना फिर मुखवस्त्रिका बाँधकर गुरुजी को तिक्खुत्तो के पाठ से तीन वार वन्दन करके चउवीसत्थव की आज्ञा लेकर नमस्कार-मन्त्र, इच्छाकारेणं तस्सउत्तरी करणेणं का पाठ बोलें। फिर इच्छाकारेणं के पाठ का ध्यान करें। नम-स्कार मन्त्र कहकर ध्यान में आर्त्तध्यान रौद्रध्यान

ध्याया हो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याया हो ध्यान में मन, वचन, काया से कोई दोष लगा हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड़ यह कहकर ध्यान पालें। फिर लोगस्स का पाठ बोलकर गुरुजी महाराज विराजमान हों तो उनसे यदि वे नहीं हों तो उत्तर-पूर्व दिशा (ईशानकोण) की ओर मुँह करके शासनपति की आज्ञा लेकर करेमिभन्ते के पाठ से सामायिक लेवें। उसके पश्चात् बायाँ घुटना खड़ा करके दो बार नमोत्थुणं का पाठ बोलें।

सामायिक पालने की विधिः—

नमस्कार-मन्त्र, इच्छाकारेणं, तस्सउत्तरी का पाठ बोलकर एक लोगस्स का ध्यान करना फिर ध्यान पालकर एक लोगस्स प्रकट कहें फिर दो बार बायाँ घुटना खड़ा करके नमोत्थुणं बोल-

---

द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

कर एयस्सनवमस्स का पाठ बोलें और फिर तीन नमस्कार का ध्यान करके सामायिक पालें।

सामायिक के बत्तीस दोष

मन के दश दोषः—

१—विवेक विना सामायिक करे तो अविवेक दोष।

२—यशकीर्ति के लिए सामायिक करे तो यशो-वांछा दोष।

३—धनादि के लाभ से सामायिक करे तो लाभ-वांछा दोष।

४—अहंकार युक्त सामायिक करे तो गर्व दोष।

५—राज्यादिक के अपराध के भय से सामायिक करे तो भय दोष।

६—सामायिक में नियाणा करे तो निदान दोष।

७—फल में सन्देह रखकर सामायिक करे तो संशय दोष।

८–सामायिक में क्रोध, मान, माया, लोभ करे तो रोष दोष।

९–विनयपूर्वक सामायिक न करे, सामायिक में देव, गुरु, धर्म की अविनय आशातना करे तो अविनय दोष।

१०–भक्तिपूर्वक सामायिक न करके वेगारी की तरह सामायिक करे तो अवहुमान दोष।

वचन के दश दोषः—

१–बुरे वचन बोले तो कुवचन दोष।

२–बिना विचारे बोले तो सहसाकार दोष।

३–राग-रागनियों से सम्बन्धित गाने गावे तो स्वच्छन्द दोष।

४–सामायिक के पाठ और वाक्य संक्षिप्त करके बोले तो संक्षेप दोष।

द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

५—सामायिक में क्लेप का वचन बोले तो कलह दोप।

६—स्त्रीकथा, भोजनकथा, देशकथा, राजकथा इन चार कथाओं में से कोई कथा करे तो विकथा दोप।

७—सामायिक में हंसी ठट्टा करे तो हास्य दोष।

८—सामायिक में उतावला २ अनुपयोगी अशुद्ध बोले तो अशुद्ध दोप।

९—सामायिक में उपयोग बिना बोले तो निरपेक्ष दोप।

१०—अस्पष्ट-गुण २ बोले तो मुम्मण दोप।

काया के १२ दोप:—

१—सामायिक में अयोग्य-अभिमान के आसन से बैठे तो कुआसन। दोप।

२–सामायिक में स्थिर आसन न रखे तो चलासन दोष।

३–सामायिक में इधर उधर दृष्टि फेरे तो चल-दृष्टि दोष।

४–सामायिक में सावद्य क्रिया इशारा आदि करे तो सावद्य क्रिया दोष।

५–सामायिक में भीतादि का सहारा लेवे तो आलंबन दोष।

६–सामायिक में बिना कारण हाथ पाँव फैलावे तो आकुंचन-प्रसारण दोष।

७–सामायिक में अंग मोड़े तो आलस्य दोष।

८–सामायिक में हाथ पैर अंगुलिया का कड़का निकाले तो मोटन दोष

९–सामायिक में मैल उतारे तो मल दोष।

द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उनके मिशन की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं सफल संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

१०–गले या गाल पर हाथ लगाकर शोकासन से बैठे तो विमासण दोष।

११–निद्रा लेवे तो निद्रा दोष।

१२–विना कारण दूसरों के पास से वैयावृत्य करावे तो वैयावृत्य दोष।

सामायिक-प्रश्नोत्तरी

प्रश्न (१) सामायिक किसे कहते हैं ?

उत्तर (१) शांति के साथ दो घड़ी (४८ मिनट) एकान्त ... में बैठकर भगवान् का भजन करना अपनी आत... को समभावी बनाना तथा समता रखने को सामा... कहते हैं।

प्रश्न (२) सामायिक के उपकरण कौन कौन से हैं ?

उत्तर (२) (१) बैठने के लिए शुद्ध सूती या ऊनी आसन।
(२) पहनने के लिए २ सफेद शुद्ध वस्त्र।
(३) मुंह पर बांधने के लिए मुंहपत्ती।
(४) नमस्कार मन्त्र जपने के लिए माला।
(५) मन को स्थिर रखने के लिए आनुपूर्वी।
(६) जीव रक्षा के लिए पूंजणी।
(७) पठन के लिए धार्मिक पुस्तकें आदि।

प्रश्न (३) नमस्कार मंत्र क्यों बोला जाता है ?

उत्तर (३) नमस्कार मंत्र हमारे धर्म का मुख्य मंत्र है। उसको बोलने से मन में शुभ भावनाएं आती हैं, चित्त आनंदित रहता है और पापों का नाश होता है। पंच परमेष्टियों को नमस्कार करने के लिए यह मंत्र बोला जाता है।

प्रश्न (४) नमस्कार मंत्र के ५ पदों में देव कितने व गुरु कितने हैं ?

उत्तर (४) अरिहंत, सिद्ध दो देव तथा आचार्य, उपाध्याय और साधु ये ३ गुरु हैं।

प्रश्न (५) तिक्खुत्तो का पाठ क्यों बोला जाता है ?

उत्तर (५) तिक्खुत्तो का पाठ गुरु वंदना के लिए बोला जाता है। इस पाठ को ३ बार विधि पहित बोलकर वंदना करते हैं।

प्रश्न (६) गुरुजी को ३ बार वंदना क्यों करनी चाहिए ?

उत्तर (६) ज्ञान, दर्शन और चरित्र की प्राप्ति के लिए ३ बार वंदना करनी चाहिए क्योंकि गुरूजी महाराज इन ३ गुणों के धारक हैं।

प्रश्न (७) इच्छाकारेणं के पाठ में क्या बतलाया गया है ?

की जयपुर से संचालित समस्त गतिविधियाँ आपकी सूझ-बूझ एवं संचालन का ही सुपरिणाम हैं।

उत्तर (७) इच्छाकारेणं के पाठ में; सामायिक में बैठने के पूर्व आते जाते या कोई काम करते समय सूक्ष्म बादर त्रस आदि किसी जीवों को कष्ट पहुँचाया हो तो उसके लिए क्षमा मांगना बतलाया गया है।

प्रश्न (८) तस्सउत्तरी का पाठ क्यों बोला जाता है ?

उत्तर (८) लगे हुए पापों को याद करके ध्यान किया जाता है उसमें उबासी छींक आदि शरीर की आवश्यक क्रियाएँ करनी पड़ती है सो १२ आगार इसमें रखे हुए हैं। उन आगारों को अपवाद में रखकर अपने ध्यान में एकाग्रता रखने का यह पाठ है।

प्रश्न (९) लोगस्स के पाठ का क्या विषय है ?

उत्तर (९) चौवीस तीर्थंकरों के नाम तथा उनकी स्तुति इस पाठ के द्वारा की गई है।

प्रश्न (१०) करेमिभन्ते ! का पाठ क्यों बोला जाता है ?

उत्तर (१०) इस पाठ से सामायिक व्रत लेने की प्रतिज्ञा की जाती है।

प्रश्न (११) नमोत्थुणं के पाठ का विषय क्या है ?

उत्तर (११) पहले नमोत्थुणं में श्री सिद्ध भगवान को तथा दूसरे नमोत्थुणं में श्री अरिहन्त भगवान को इस पाठ द्वारा नमस्कार किया जाता है। उनके गुण-कीर्त्तन का इस पाठ में वर्णन किया गया है।

प्रश्न (१२) एयस्स नवमस्स के पाठ का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर (१२) सामायिक में जो पापकारी क्रियाएँ की हो उनके दोषों से निवृत्ति होने के लिए यह पाठ बोला जाता है। यह पाठ सामायिक पालने का है।

प्रश्न (१३) सामायिक का क्या लाभ-फल है ?

उत्तर (१३) सामायिक से समभाव की प्राप्ति होती है। राग द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ से मुक्ति मिलती है, पुराने कर्मों की निर्जरा होती है। आत्मा को सच्ची शान्ति मिलती है। तथा सच्चे सुख की प्राप्ति होती है।

सामायिक करने से मन, वचन और काय के व्यापारों से निवृति होती है। आत्म सन्तोष, आध्यात्मिक सुख प्राप्त होता है।

——*——

. से संचालित समस्त गतिविधियां आपकी सूझ-बूझ एवं का ही सुपरिणाम है।